पंचम अध्याय

कहानी साहित्य में प्रसाद का योगदान

पंचम अध्याय

"कहानी साहित्य में प्रसाद का योगदान"

प्रस्तावना :

हिंदी गदय विधाओं में 'कहानी' सबसे सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है। आज कहानी के पाठक अन्य विधाओं की तुलना में सर्वाधिक हैं, यही कारण है कि पत्र–पत्रिकाओं में कहानियों की मांग सर्वाधिक है। यही नहीं अपितु कई पत्रिकाएं तो केवल कहानी पत्रिकाएं ही हैं, जो समकालीन कथाकारों की स्तरीय कहानियों के साथ–साथ उभरते हुए कहानिकारों की कहानियां भी छापती हैं। विगत ९० वर्षों में हिंदी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साहवर्धक है। अन्य सभी गदय विधाओं की अपेक्षा आज की हिंदी कहानी में युगबोध की क्षमता सबसे अधिक दिखाई पड़ती है।

वास्तव में कहानी मं जीवन के किसी एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती है। कहानी का मूल आत्मा 'एक संवेदना या एक प्रभाव' है। कहानी का मुख्य उद्देश्य भी कम – से – कम शब्दों मे उस प्रभाव को अभिव्यक्त करना मात्र है।

हिंदी कहानी की विकास यात्रा का प्रारम्भ १९०० ई. के आस–पास ही मानना समीचीन है, क्योंकि इससे पूर्व हिंदी में 'कहानी' जैसी किसी विधा का सुत्रपात नहीं हुआ था। हिंदी की प्रथम कहानी कौन–सी है – यह एक विवादास्पद प्रश्न है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'इन्दुमती' को ही हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है जिसका प्रकाशन सन् १९००ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में हुआ था, किंन्तु शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' का अनुवाद है, अत: मौलिक रचना नहीं कही जा

सकती। सरस्वती पत्रिका में ही सन् १९०३ ई. में रामचन्द्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का स्मय' प्रकाशित हुई तथा सन् १९०७ में बंग महिला की 'दुलाई वाली' कहानी छपी।

हिंदी कहानी के उद्‌भव और विकास में प्राचीन साहित्य, पाश्चात्य कथासाहित्य एवंम् लोककथा साहित्य का संम्मिलित प्रभाव देखा जा सकता है। उपनिषदों, बौध्द, जैन साहित्य और संस्कृत कथा साहित्य के रूप में भारत का प्राचीन कथा साहित्य बिखरा हुआ है। प्राकृत और अपभ्रंश में भी कहानियाँ उपलब्ध हुई। आज हिंदी कहानी को स्वतंत्र रूप मिला। कला और शिल्प दोनो दृष्टियों से वह अधिक प्रभावशाली बनी हैं।

५.१ कहानीकार प्रसाद :–

कवि और नाटय्कार के सदृश कहानीकार प्रसाद एक महान् कलाकार है। उनकी विराट् प्रतिभा इनमें भी दृग्गत है। किंतु कविता, नाटक और कहानी की विधाओं में प्रसाद प्रथम श्रेणी के कलाकार हैं।

''कहानीकार प्रसाद का हिंदी साहित्य में दो रूपों में महत्व है; प्रथम ऐतिहासिक, द्वितीय सृजनात्मक। ऐतिहासिक से अभिप्राय है कि उन्होने उस समय (१९१२ ई. में) कहानियाँ लिखनी शुरू की थीं, जब हिंदी में इस विधा का कोई उल्लेख और मौलिक साहित्य था ही नहीं; 'उसने कहा था' (जून १९१५ ई.) तथा 'पंचपरमेश्वर' (जून १९१६ ई.) तक की रचना न हुई थी। 'छाया' और 'प्रतिध्वनि' के छायावादी शीर्षक परवर्ती हैं, उनका कोई विशेष तात्विक महत्व नहीं है, क्योंकि छायावादी (रोमौन्टिक अथवा स्वच्छंदतावादी) कहानी का प्रभावी और सुनियोजित समारम्भ 'आकाशदीप' से होता है, किन्तु काल्पनिकता, भावुकता, प्रकृति–प्रेम और नारी–संवेदना इनकी कहानियों में ठीक उसी प्रकार प्राप्त होते हैं, जैसे कविता की विधा में 'प्रेम–पथिक' और 'झरना' में। इन पर बंगीय भावुकता का प्रभाव भी पड़ा है। छायावादी कहानी पर बंगीय प्रभावर एक विशिष्ट शोध- विषय है, जब कि हिन्दी – कहानी पर

बंगीय प्रभाव भी व्यापक है। प्रसाद की प्रतिभा पर बंगीय प्रभाव व्यापक विषय है। आरम्भिकता में जो एक सायास आरोपित दार्शनिकता प्राप्त होती है, उनके दर्शन भी इनमें होते हैं। किन्तु अपनी मूल संवेदनों में इन कहानियों में प्रसादत्व का जो उन्मेष हुआ है, वह कलाकार के जीवन मे सतत विकासमान ही रहा और इस दृष्टी से इनका अनुशीलन अपेक्षित ही नहीं, कदाचित अनिवार्य भी है। यही नहीं, 'छाया' की 'गुलाम' और 'प्रतिध्वनि' की 'सहयोग' कहानियों में क्रमशः यौन–विकृति और यौन – कुष्ठा का गम्भीर मनोवैज्ञानिक चित्रण प्राप्त होता है।'' १

'' 'आकाश–दीप' में छायावादी कहानी–कला को चरम उत्कर्ष प्राप्त होता है। 'आकाश दीप', 'ममता', 'कला', 'देवदासी' और 'बिसाती' जैसी कहानियाँ रवीद्रनाथ ठाकुर की सर्वोत्कृष्ट कहानियाँ के समकक्ष है। 'आँधी' मे प्रसाद एक प्रबृध्द एवं जागरूक कलाकार के सदृश, इतिहास–रथ के चक्र के साथ–साथ चलते हुए, विधा सम्राट प्रेमचन्द से परोक्षतः प्रभावित होते हुए, यथार्थ की ओर आकृष्ट भी दीखते हैं। 'आँधी' पचास प्रतिशत छायावादी और पचास प्रतिशत यथार्थवादी कृति है। इसकी सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ ('पुरस्कार' और 'मधुआ') इस तथ्य को स्पष्ट कर देती हैं। 'इन्दुजाल' तक आते–आते प्रसाद छायावाद पर यथार्थवाद को वरीयता प्रदान करते दृष्टिगोचर होने लगते हैं। इसमें 'कंकाल' का कलाकार कहानी का नेतृत्व करता प्रतीत होता है। प्रसाद का यथार्थवाद स्वच्छन्दतावादी यथार्थवाद है, वादबध्द अथवा रूढ़िबध्द ठेठ यथार्थवाद नहीं। यह उसकी विशिष्टता ही है। इसी के कारण उनकी कहानियाँ अधिक मान्य और अधिक सिध्द हुई है और सिध्द होंगी। 'गुंड़ा' और 'नुरी' जैसी कहानियाँ इस तथ्य को ही प्रभावित करती हैं। 'चित्र मंदीर' और 'देव – रथ' जैसी कहानियों में भी इस तथ्य के दर्शन किए जा सकते हैं।'' २

---

१. डॉ रामप्रसाद मिश्र – 'प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'–पृष्ठ क्र. २०५
२. वही – पृ. क्र. २०५

प्रसाद के समूचे कहानी – साहित्य का सम्यक् विवेचन – विश्लेषण तभी हो सकता है, जब प्रसाद की छायावादी कहानियाँ, प्रसाद की यथार्थपरक कहानियाँ, प्रसाद की ऐतिहासिक कहानियाँ, प्रसाद की सामाजिक कहानियाँ, प्रसाद के कहानी – साहित्य की शैलियों को सूक्ष्मता से परखा जाए–

''प्रसाद की कहानियों के व्यापक आयामों में नाना धर्मो के पाखण्ड़ एवं विकार पूर्वग्रह–रहित रूप में चित्रित मिलते हैं। 'देवदासी' (हिन्दूधर्म), 'सालवती' (जैनधर्म), 'देवस्थ' (बौध्दधर्म) और 'स्वर्ग के खण्ड़ हर में' (इस्लाम) जैसी कहानियाँ प्रविष्ट अधार्मिकता का प्रशान्त चित्रण करती है। प्रवृत्ति की दृष्टि से प्रसाद की कहानियों का प्राय: सर्वव्यापक विषय है प्रेम – असफल प्रेम, जो एकपक्षीय रहता है। प्रसाद की कहानियों की एक बड़ी विशेषता है, उनकी अपार संवेदनाशीलता। रजा हो या रंक, साहसिक हो या सज्जन, भिक्षुणी हो या वेश्या, सबका चित्रण वे संवेदनपूर्वक करते हैं।'' १

यह सब होते हुए भी कहानीकार के रूप में प्रसाद एक सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार है। अपनी कहानियों के माध्यम से उन्होने अलग–अलग समस्याओं को चित्रित किया है। आदर्शवादी प्रवृत्ति से प्रेरित होकर प्रसाद ने कहानियाँ लिखीं। प्रसाद ने पाँच कहानी संग्रह लिखे हैं। वे कहानी संग्रह बहुत प्रसिध्द हुये। पाँच संग्रहों में उन्होंने अलग–अलग ढ़ंग की कहानियाँ लिखी हैं।

प्रसाद के कहानी संग्रह निम्नलिखित हैं –

१) आकाश दीप
२) आँधी
३) इन्द्रजाल
४) प्रतिध्वनि
५) छाया

---

१) डॉ. रामप्रसाद मिश्र – ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण''– पृष्ठ क्र. २०८

५.१.१ आकाश – दीप :–

''प्रसाद का बृहत्तम कहानी – संग्रह 'आकाश–दीप' उनकी प्रकृत रोमैन्टिक कला का भी आकाश–दीप है। 'आकाश–दीप' की अनेक कहानियाँ उच्चकोटि की छायावादी सृष्टियाँ हैं। ' आकाश–दीप' कहानी संग्रह में उन्नीस कहानियों का समावेश हुआ है। 'आकाश–दीप', 'ममता', 'कला', 'देवदासी', और 'बिसाती' मार्मिक एवं उत्कृष्ट रोमैन्टिक सृष्टियाँ है। 'स्वर्ग के खंण्डहर' में उलझावों को दिखाया है। 'वैरागी' घटना है, कहानी नहीं, भले ही मार्मिक हो। 'चूडीवाली' सामाजिक कहानी है और प्रसाद की प्रकृति सामाजिक कहानी रचने की न थी; फिर भ उल्लेखनिय है। 'सुनहला साँप', 'हिमालय का पथिक', 'भिखरीन', 'प्रतिध्वनि', 'समुद्र–संतरण', 'बनजारा', 'अपराधी', 'प्रणय–चिन्ह', 'रूप की छाया', 'ज्योतिष्मीती' और 'रमला' में कल्पना है, भावुकता है, कविता है, किन्तु जीवन नहीं। आकाश–दीप प्रसाद का उत्कृष्ट कहानी संग्रह है।'' १

'आकाश – दीप' प्रसाद की ऐतिहासिक परिवेश में रचित कहानी है। चम्पा बुध्दगुप्त से प्रेम भी करती है और घृणा भी करती है। इस कहानी में त्याग और समर्पण पूर्ण प्रेम का चित्रण किया है। 'ममता' भी ऐतिहासिक कहानी है जिसमें प्रसादजी ने भारतीय संस्कृति का चित्रण किया है।

" तीसरी कहानी ' स्वर्ग के खण्डहर में' का शीर्षक अथवा विपर्यय का सूचक न होकर लौकिक पलायन में अलौकिक के आभास की निस्सारता का सूचक है। कहानी के कलेवर, विशेषत: पूर्वार्ध्द में एक आकर्षक रोमैन्टिक कल्पना – लोक चित्रित किया गया है, जिसका आधार कथानक के आग्रहवश, इस्लाम की जन्नत है।"२ इसमें प्रकृति का चित्रण भी मिलता है।

---

१. रामप्रसाद मिश्र – ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' – पृष्ठ क्र. २१४
२. वही – पृष्ठ क्र. २१८

''चौथी कहानी ''सुनहला साँप'' का आरम्भ कुतूहल उत्पन्न करने में सक्षम है। इसकी भाषा–शैली विषय–वस्तु के अनुरूप है। इसमें कुण्ठित मानस में व्याप्त सहज यौनगत ईर्ष्या का चित्रण भी प्राप्त होता है।'' १ इसमें प्रथम दृष्टि प्रेम को चित्रित किया है।

पाँचवी कहानी 'हिमालय का पथिव' जिसमें पथिक और किन्नरी के अलौकिक प्रेम को चित्रित किया है। साथ ही प्रकृति का भी चित्रण किया है।

"छटी कहानी 'भिखारिन' घटना मात्र है इसके अंत मे भिखारिन का नारी– तेज से सम्पन्न रुप प्रभावी भी है, यथार्थ सम्पन्न भी।"२

''सातवीं कहानी 'प्रतिध्वनि' यह एक ऐसी कथा मात्र है, जिसमें कोई सहजता नहीं। इसकी लगभग असम्बध्द साँकेतिक दुखान्तता तो नाहक ही लादी गई चीज लगती है। अन्त में शीर्षक को सार्थकता प्रदान करनेवाली शैली भी प्रतिभा की आरम्भिकता का स्मरण मात्र कराती है।'' ३

''आठवी कहानी 'कला' है। कला को सभी चाहते थें, पर रूपनाथ और रसदेव उसके विशेष भक्त थें। कला, जैसा कि अभियान से ही स्पष्ट है, व्यापक सुन्दरता की प्रतीक है। कला शब्द का एक अर्थ है सौन्दर्य; अंत:, आभ्यन्तर सौन्दर्य की अभिव्यक्ति को कला कहते हैं।'' ४

'' 'देवदासी' पत्र – शैली में लिखित सफल एवं श्रेष्ठ कहानी है। हिंदी में पत्र–शैली की कहानियां एक उत्कृष्ट निबंध का विषय है। इसमें भी प्रसाद का एक निश्चित स्थान है। प्रसाद एक महान् प्रयोग के सफल कलाकार हैं। "५ इस कहानी में देवदासी – प्रथा का चित्रण नजर आता है। यह नाटयपूर्ण उत्कृष्ट कहानी है।

---

१. रामप्रसाद मिश्र – ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' – पृष्ठ क्र. २१८
२. वही – पृ. क्र. २१९
३. वही – पृ. क्र. २१९
४. वही – पृ. क्र. २१९
५. वही – पृष्ठ क्र. २२०

''दसवीं कहानी 'समुद्र–संतरण' एक सुखान्त रोमैन्टिक कल्पना है, जिसमें एक राजकुमार का एक धीवर–बाला से अनुराग चित्रित है। ऐश्वर्य की उष्मा से उबकर व्यक्ति का सामान्य जीवन शीतलता की ओर आकृष्ट होना सम्भव तो है, किन्तु सरल नहीं, और प्रसाद, कदाचित स्वानुभूति से चंचलित होकर, इसे प्राय: सरलतम बनने का प्रयास करते प्रतीत होते हैं।'' १

''ग्यारहवीं कहानी ''वैरागी'' एक मार्मिक घटना है, कलात्मक कहानी नहीं, किन्तु इसमें यथाशीर्षक नायक का प्रस्तुतिकरण अतीव प्रशस्य है। आरम्भ में एक नारी का कुटीर में आश्रय – आग्रह रसीली कहानियों और रँगीले चलचित्रों का आभास कराने लगता है।'' २

''बारहवीं कहानी ''बनजारा'' है, जिसमें ड़ाके और चौकीदार के अत्याचार क्रमश: नायक और नायिका मोनी पर निरर्थक ही सिध्द होते हैं, क्योंकि दोनों, प्रसाद के विशिष्ट एकपक्षीय प्रेमचित्रण के आखेट बनने के कारण, मिल नहीं पातें।'' ३

तेरहवीं रचना ''चूड़ीवाली'' एक सामाजिक कहानी है, जिसमें सुधारपुरक दृष्टिकोन नजर आता है। चूड़ीवाला के माध्यम से प्रसाद ने वेश्या के एकनिष्ठ प्रेम को चित्रित किया है।

''चौदहवी कहानी ''अपराधी'' है, जिसमें मालिन का काम करने वाली युवती कामिनी राजकुमार के द्वारा माता तो बना दी जाती है, किंतु उसके पुत्र को पिता का परिचय तक नहीं मिल पाता।'' ४ गरिब लोंगो के जीवन का मूल्य कुछ नहीं होता यह प्रसाद ने दिखाया है।

---

१. रामप्रसाद मिश्र – ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' – पृष्ठ क्र. २२१
२. वही – पृ. क्र. २२१
३. वही – पृ. क्र. २२१
४. वही – पृ. क्र. २२३

''पंद्रहवीं कहानी ''प्रणय–चिन्ह'' एक अस्पष्ट कथा मात्र है। यह भी एक प्रेमकहानी है। इसमे एक पुरूष संसार से घबराकर एकांत में जानेवाला है और दूसरा एकांत से घबराकर संसार में जाना चाहता है।'' १

सोलहवीं कहानी ''रूप की छाया'' है। इसमें प्रसाद ने सामाजिक रूढ़ी का शिकार सरला का चित्रण किया है। सरला बाल–विवाह का शिकार हो गयी थी।

''सत्रहवीं कहानी ''ज्योतिष्मती'' है जिसमें एक प्राकृतिक फूल का चित्रण किया है। बूढ़े वनराज की सुन्दरी बालिका वनलता की सुन्दरी बालिका वनलता पिता की अंधता को नष्ट करनेवाली दुर्लभ औषधि ज्योतिष्मती का अन्वेषण करते हुए एक साहसिक के संपर्क में आती है। यह एक प्रतीकात्मक कहानी है।'' २

''अठराहवी कहानी ''रमला'' भी अस्पष्ट प्रतीकात्मक कहानी मानी जा सकती है। यह भी लोककथामूलक हो सकती है। नायक साजन रमला झील के तट पर, जल वनस्पतीयों पर आश्रित जीवनयापन करते हुए, एकांत में रहता रहता है।'' ३ इसमें प्रकृति का सुंदर चित्रण किया है।

''विसाती'' कहानी छोटी होते हुए भी एक महान कहानी है। इसमें प्रकृति का अनुपम सौन्दर्य चित्रित किया गया है। ''बिसाती'' कहानी रोमैन्टिक ही, पर उसमें एक ऐसा गहरा दर्द है, जो यथार्थ को भी यथार्थ सम्पन्न करने लगता है।

''आकाश दीप' में रोनैन्टिक कहानी–कलाचरम उत्कर्ष और परम गौरव प्राप्त करती है। इस संग्रह में अधिकांश कहानियों का मूल विषय प्रेम, प्रमुखत:

---

१. रामप्रसाद मिश्र – ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' – पृष्ठ क्र. २२३
२. वही – पृ. क्र. २२४
३. वही – पृ. क्र. २२४

असफल अथवा एकपक्षीय प्रेम है, क्योंकि प्रसाद प्रेम के प्रतीक स्त्रष्टा हैं, एक एक पक्षीय प्रेम के मानवीकरण हैं। प्रतीकात्मक कहानियाँ भी इसका महत्व बढ़ाती है। यदयपि इसमें शिथिल और असफल कहानियाँ कम नहीं हैं, तथापि गुण – परिणाम के उभय निकषों पर खरी रचनाएं इसे समग्र कहानी–साहित्य एक गौरव ग्रंथ बना देती है।'' १

५.१.२ आँधी :–

'' 'आकाश दीप' के अनंतर प्रसाद का सर्वोत्तम कहानी – संग्रह 'आँधी' ईषत् रोमैन्टिक एवं ईषत् यथार्थपर गंगा यमना छटा से सम्पन्न एक महान ग्रंथ हैं। इसमें 'आँधी', 'मधुआ', 'दासी', 'घीसू', 'बेडी', 'व्रतभंग', 'ग्राम–गीत', 'विजया', 'अमिट स्मृति' 'नीरा' और 'पुरस्कार शीर्षक ग्यारह कहानियाँ संग्रहीत हैं। ' आँधी' 'घीसू' 'बेडी' 'ग्राम–गीत' और 'अमिट–स्मृति' दुखांत कहानियाँ हैं, 'मधुआ', 'व्रत–भंग' और 'विजया' सुखांत तथा 'दासी', 'नीरा' और 'पुरस्कार' 'सुखांत' तथा 'दासी' 'नीरा' और 'पुरस्कार' सुखांत– तथा 'दासी' नीरा' और 'पुरस्कार' सुखांत दुखांत – समन्वित। प्रसाद के नाटकों की महती उपलब्धि सुखांत – दुखांत समन्वय उनकी कतिपय कहनियों में भी प्राप्त होती है। 'पूरस्कार' और 'मधुआ' महान् कहानियाँ हैं; प्रथम रोमैन्टिक सृष्टि है, द्वितीय यर्थाथपरक। 'आँधी', 'दासी', और 'बेड़ी' श्रेष्ठ कहानियाँ हैं, प्रथम –व्दितीय रोमैन्टिक, तृतीय यथार्थपरक। 'व्रत–भंग' मध्यम श्रेणी की कहानी है, जिसमें रोमैन्टिक एवं यथार्थ तत्वों का समन्वय दृग्गत होता है। 'घीसू', 'ग्राम–गीत', 'विजया', 'अमिट–स्मृती', और 'नीरा', कला की दृष्टि से असफल, घटना – प्रधान रचनाएं हैं। इस संग्रह के महत्व का प्रधान आधार 'पुरस्कार' और 'मधुआ' कहानियाँ हैं, जिनके कारण यह 'इन्द्रजाल' से श्रेष्ठतर सिध्द होता है।'' २

---

१. रामप्रसाद मिश्र–''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण '' – पृष्ठ क्र. २२६
२. वहीं–पृष्ठ क्र. २२७

'' 'आँधी' '' प्रसाद की आकार में सबसे बड़ी कहानी है। यह संग्रह की पहली कहानी है। यह संग्रह की पहली कहानी है। 'आँधी' मन में उठनेवाले निराशा का प्रतीक है। इस उत्कृष्ट कहानी में रोमैन्टिक तत्व की अधिकता है। 'आँधी' में विशेषत: लैला के सर्वथा सकारण आवेश के समय, उच्चकोटि की नाटकीयता के दर्शन होते हैं।'' १ यह एक मार्मिक एवं उत्कृष्ट कलाकृति है। इसमे जीवन के सत्य को चित्रित किया गाया है।

''दुसरी कहानी ''मधुआ'' मानवीय गौरव की सार्वभौमता को व्यक्त करनेवाली महान् यथार्थपरक रचना है। यह हिंदी के कहानी–साहित्य में वात्सल्य की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें मानवीय मूल्यों को चित्रित किया ग्या है। 'मधुआ' 'प्रसाद की ही नहीं, हिंदी के समग्र कहानी – साहित्य की एक महान उपलब्धि है।'' २

''तीसरी कहानी ''दासी'' का शीर्षक फिरोजा पर रखा है, जैसा कि अन्त में स्पष्ट हो जाता है किन्तु इसमें किसी एक चरित्र को प्रधान कहना कठिन है। यह ऐतिहासिक परिवेश में रचित काल्पनिक कहानी है। इसमें तुर्को के आतंक, उनकी क्रुरता एवं उनके द्वारा भारत में प्रचलित की गई क्रय–विक्रय – मूलक भयावह दास – प्रथा इत्यादि का चित्रण भी तथ्यसंगत एवं प्रभावी है।'' ३

'' 'घीसू' एक घटना है, कहानी नहीं। घीसू के अनभ्यस्तं जीवन पर जब बिन्दो के दायित्व का प्रहार पड़ता है, तब वह उसे नहीं सम्हाल पाता और काल–कवलित हो जाता है।'' ४

'बेडी' पाचवी कहानी है। '' 'आँधी' संग्रह में प्रसाद वात्सल्य सम्पन्न हो गए हैं। 'मधुआ' और 'बेड़ी' दो निदर्शन हैं। एक अन्धे भिखारी का, अपने

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' पृष्ठ क्र. २२७
२. वहीं – पृ. क्र. २२९
३. वहीं – पृ. क्र. २३०
४. वही – पृ. क्र. २३०

पापी पेट के लिए, एकमात्र पुत्र के, भागने न देने के उद्देश से, पैरों में बेड़ी ड़ालने और एतद्परिणामस्वरूप 'हिट्–एंड़–रन्' के प्रतीक नवीन बाबू, जो चालीस मील स्पीड़ से मोटर दौड़ा रहे थें, के द्वारा उसका जीवनांत इत्यादी इस लघु–रचना को एक अविस्मरणीय दुखांत कथा बना देते हैं, जो यथार्थ – पुष्ट भी हैं। यह एक श्रेष्ठ रचना है। १

छठी कहानी ''व्रत – भंग'' है। यह ऐतिहासिक कहानी है। इसमें एक दरिद्री युवक प्रतिशोध लेता है।

''सातवी रचना ''ग्राम – गीत'' है तो घटना ही, जिसमें एक निर्धन और विधवा रोहिणी के जीवनसिंह नामक भूस्वामी से असफल प्रेम, तज्जन्य प्रमाद एवं अवसान का वृत्त प्राप्त होता है।'' २ इसमें दुखांतत चित्रित होती है।

''आठवीं कहानी ''विजया'' विजयादशमी से सम्बध्द है। इसमें एक लखपति का एक ही झटके में केवल रूपयातित बनकर उसके आत्महत्या तत्पर होने और उसी के द्वारा माता बनाई गई विधवा सुन्दरी की प्रेरणा से गृहस्थ बनने की घटना वर्णित है। इस अत्यन्त सामान्य रचना की एकमात्र विशेषता इसका सुखांत होना है, क्योंकि सुखांतता प्रसाद की कहानी – कला में एक दुर्लक्ष तत्व ही है।'' ३

नववीं कहानी ''अमिट–स्मृती'' में देशकाल का चित्रण किया गया है। यह एक दुखांत घटना है।'' ४

''दसवी कहानी ''नीरा'' का सुखांत – दुखांत समन्वय मन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं छोड़ पाता। इसमें देवनिवास का नीरा से विवाह के लिए

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' पृष्ठ क्र. २३०
२. वहीं – पृ. क्र. २३१
३. वहीं – पृ. क्र. २३१
४. वहीं – पृ. क्र. २३१

प्रस्तुत होना पर्याप्त कारण सम्पन्न न होने के कारण अप्रात्ययिक रह गया है। 'नीरा' में प्रवासी भारतियों की दयनीय दशा की झलक दिखायी देती है। कला की दृष्टि से अनपेक्षित होते हुए भी, इसके संवाद, उक्त दृष्टियों से स्मरणीय कहे जा सकते हैं।'' १

'' 'पुरस्कार' प्रसाद की कहानियों में श्रेष्ठतर रचना है। उत्कृष्ट देशकाल चित्रण, मनोहरी संवाद और अद्वितीय अन्तव्दंन्व्द अवतारणा जैसे तत्व इसे एक अमर रोमैन्टिक कहानी बना चुके हैं। भावना और कर्तव्य, प्रेम और देशभक्ति के व्दन्व्द का चित्रण मिलता है। 'कला जीवन के लिए' इस निकष पर 'पुरस्कार' कहानी महान है।'' २

''प्रसाद मूलत: रोमैन्टिक कलाकार है, तथापि उन्होंने 'छाया' से लेकर 'इन्द्रजाल' तक सर्वत्र यथार्थ के प्रति ललक दिखलाई है। रोमैन्टिक में कल्पना का स्थान प्रमुख रहता है। अताएव, प्रसाद का विशेष कल्पनाशील होना गुण है, दोष नहीं। प्रसाद आधुनिक काल में हिंदी के सर्वाधिक भावुक साहित्यकार हैं। भावुकता छायावाद की आत्मा है। बौध्दिकता पर भावुकता को वरीयता प्रदान करने का कामायनी – दर्शन प्रसाद के प्राय: समग्र सृजनात्मक साहित्य पर छाया हुआ है। कहानियों पर भी, कूल मिलाकर, यही बात लागू होती है। 'आँधी' में प्रसाद अपेक्षाकृत अधिक यथार्थ – सम्पन्न हैं। 'आँधी' एक सफल व्दिमुख कृति है; उसका एक आनन छायावाद की ओर है, दुसरा यथार्थवाद की ओर वह 'आकाश – दीप' और 'इन्द्रजाल' के मध्य सेतु का कार्य सम्पादित करती है'' ३

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' – पृष्ठ क्र. २३२

२. वहीं – पृ. क्र. २३३

३. वही – पृ. क्र. २३३

५.१.३ इन्द्रजाल :—

'' 'इन्द्रजाल' प्रसाद की चौदह परवर्ती, प्रौढ़ एवं अपेक्षाकृत अधिक यथार्थोमुख कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में केवल तीन कहानियाँ ('इन्द्रजाल', 'परिवर्तन' और 'सालवती') सुखान्त हैं, किन्तु इन पर भी प्रच्छन्न व्यथा की छाया के दर्शन किए जा सकते हैं। शेष कहनियों में पाँच ('छोटा जादूगर', 'गुंडा', 'अनबोला', 'देवरथ' और 'विराम–चिन्ह') पूर्णत: एवं छ: ('सलीम', 'नूरी', 'सन्देह', 'भीख में', 'चित्र वाले पत्थर' और 'चित्रमंदीर') दुखांत कृतियाँ हैं।'' १

''इन्द्रजाल'' ऐतिहासिक कहानी है। इसमें प्रसाद एक प्रौढ़ कहानीकार के रूप में समाज के विभिन्न वर्गों का प्रभावी चित्रण करने में सफल हुए हैं। इसमें उपेक्षित और अपराधी जातियों के जीवन में गहरी पैठ की सूचना देती है।'' २

''धर्मान्धता एवं कामुकता के विकृत रूपों के समाहार की कहानी ''सलीम'' में पठान अमीर का सुदृढ़ चरित्र हिन्दू–मुस्लिम एकता की गांधीवादी निष्पात्ति हो सकात है, किन्तु उसमें यथार्थ की व्याप्ति स्पष्ट है, 'सलीम' कहानी में प्रसाद का वस्तुपरक दृष्टिकोण अन्त तक विकृत – काम नायक के प्रति संवेदनशील बना रहता है। कहानी आकर्षक एवं विचारोत्तेजक प्रतीत होती है।'' ३

'' 'छोटा जादूगर' को 'प्रसाद का ईदगाह' कहा जा सकता है। प्रसाद का 'छोटा जादूगर' अपेक्षाकृत एक सामान्य कहानी है, किन्तु उसकी आत्मा में बालक का पावन मातृप्रेम 'ईदगाह' का स्मरण कराने में सक्षम है। 'छोटा जादूगर' का शिर्षक और कार्य–कलाप पुस्तक के शीर्षक 'इन्द्रजाल' के सर्वथा अनुरूप है।'' ४ यह दुखान्त कहानी है।

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण'' – पृष्ठ क्र. २३४
२. वहीं – पृ. क्र. २३५
३. वही – पृ. क्र. २३६
४. वही – पृ. क्र. २३६

''चौथी कहानी ''नूरी'' प्रसाद की उत्तम कहानियों में एक मानी जा सकती है। इसमें मुगल–वातावरण, विशेषत: विलासिता का प्रभावी चित्रण किया गया है। यह ऐतिहासिक कहानी है। हिन्दू–मुस्लिम एकता अथवा सर्वधर्म समन्वय का चित्रण किया है। दासियों के दयनीय यौनजीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है। नायक याकूब के पिपासा–कलित अधरों में नायिका नूरी के अश्रुओं के गिरने के साथ कहानी का अंत बहुत ही मर्मस्पर्शी है।'' १

'' 'परिवर्तन' कहानी में मुखर और कुण्ठित मध्यवित्त पति चन्द्रदेव की उपेक्षा एवं संदेह के कारण मालती मायके चली जाती है। चन्द्रदेव की दूसरे विवाह की इच्छा मनोवैज्ञानिक द्वंद्व से सम्पन्न है। चन्द्रदेव को राम के एक पत्नी व्रत का स्मरण होता है। इस सुखान्त कहानी का आरम्भ भी गम्भीर हास्य के साथ होता है।'' २

''छठी कहानी ''सन्देह'' उत्कृष्ट आरम्भिक कुतूहल से निष्पन्न कहानी है। इसमें धनी परिवारों में भले–चंगे आदमी को भी पागल बनाकर उसके धन को हड़प जाने का प्रकरण काफी ठोस है। इस कहानी का नायक राम निहाल, नारी की बाहय परिस्थिती को अपनी स्पृध के अनुकूल मानकर, अपने को प्रेमपात्र मानने की व्यापक पुरूष प्रवृत्ति के निदर्शन रूप में चित्रित किया गया है।'' ३

'' अप्रत्ययिक नाटकीयता ने ''भीख'' कहानी को उसके वास्तविक स्तर से च्युत कर दिया है, किन्तु इसमें नायक ब्रजराज का परकीया मालो के प्रति गहन, किन्तु असफल प्रेम मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है।'' ४

---

१) रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २३७
२) वही – पृ. क्र. २३८
३) वही – पृ. क्र. २३८
४. वही – पृ. क्र. २३८

''आठवीं कहानी 'चित्रवाले पत्थर' का भयानक रूप से आरम्भ सर्वथा अनुकूल है। कुतूहल की दृष्टि से अद्‌भुत रूप से सफल यह कहानी, कुल मिलाकर , ''से रोमांस, एक रोमांच और बस '' भले ही हो, किन्तु इसका भयानक आरम्भ और रहस्यमय अन्त अती कलात्मक है। विधवा मंगला का प्रेमी मुरली उसे अन्य पुरूष के साथ देखकर जिस घृणा और प्रेम की द्विविध द्वन्द्व–ज्वाला में दग्ध – शीतल होता है, एतद्‌संबध्द अंश के कारण कहानी जीवन – रस से सम्पन्न भी कही जा सकती है।'' १

'' 'चित्र – मंदिर' कहानी एक उच्च कोटि की रोमैन्टिक कृति है, जिसका पुरातत्व और मनोविज्ञान का समवाय रूप अती आकर्षक है। इस कहानी में प्रसाद ने एक महान् वाक्य की रचना की है, 'मनुष्यों ने अपने हाथों को पृथ्वी से उठाकर अपने पैरों पर खड़े होने की सूचना दे दी थी।' '' २

'' 'गुंडा' 'इन्द्रजाल' की सर्वाधिक प्रसिध्द कहानी है। अनेक अध्येता इसे संग्रह की श्रेष्ठतम कहानी मानते हैं। सह ऐतिहासिक कहानी है। कहानी में सम्पन्न एवं कुलीन नन्हकूसिंह प्रेम की असफलता के कारण 'गुंड़ा' तो बन गया, किंतु प्रिया– स्मृति की चारित्रिक पवित्रता के द्वारा रक्षा करता रहा और अन्तातोगत्वा उसके एवं उसकी संतति की गौरव–रक्षा के लिए स्वयं को बलिदान में दे दिया।'' ३

''ग्यारहवीं रचना '' अनबोला'' वस्तुत: एवं तत्वत: एक घटना है। घटना करूण है। निर्धन जग्गैया के प्रति सम्पन्न कामैया ज्ञात–अज्ञात अनुराग, जो उक्त बालक की माता की असामयिक मृत्यू एवं शवदाह के समय बाहय

---

१) रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २३९
२) वही – पृ. क्र. २३९
३) वही -- पृ. क्र. २४१

अथवा सामाजिक सीमाओं का अतिक्रमण कर अश्रुओं में व्यक्त हो पड़ता है, मूल मानवीय एकता तथा आरोपित शोषण–अनाचार दोनों को ही बिम्बित कर सकता है।'' १

'' 'देवरथ' कहानी में इतिहास – मर्मज्ञ प्रसाद ने बौध्द धर्म एवं उसके विकृत वज्रयानी रूप का यथार्थ – चित्रण किया है। इस करूण कहानी में नायिका सुजाता का अन्तर्द्वन्व्द एवं आक्रोश, गौरव एवं सारल्य, विचार एवं भाव अती मार्मिक रूप से चित्रित किया गया है। यह ऐतिहासिक परिवेश में रचित काल्पनिक कहानी तथ्य से भरपूर है। इसमें असफल प्रेम का चित्रण किया है। 'देवरथ' एक उच्चकोटि की कहानी है।'' २

''तेरहवीं कहनी ''विराम–चिन्ह'' हरिजनों के मंदिर प्रवेश की गांधीवादी चेतना का करूण प्रतिफलन है। इसमें यथार्थ कल्पना से अधिक सशक्त है।'' ३

'' 'सालवती' लगभग अठ्ठाइस पृष्ठों की एक भारी – भरकम कहानी है, लघु उपन्यास वत् है। कहानी में सालवती का अकस्मात् ही वेश्या अथवा नगर – वधू बन जाना असम्भव तो नहीं है, क्योकि सौन्दर्य स्वयं मे एक महती उपलब्धि है। सालवती को, उसके द्वारा ही जन्मकाल में त्यागा गया, पुत्र एवं वास्तविक प्रेमी उपराजा अभयकुमार की प्राप्ति रचना को सुखांत रूप प्रदान करती है।'' ४

'' 'इन्द्रजाल' की कहानियाँ प्रसाद की अंतिम तथा प्रौढ़तम कहानियाँ हैं। क्रम से चलें तो 'नूरी', 'चित्र–मंदिर', 'गुंड़ा', 'देवरथ' और 'सालवती' इस संग्रह की ही नहीं बल्की प्रसाद के समग्र कहानी–साहित्य की श्रेष्ठ कहानियों में हैं। 'इंन्द्रजाल' की अनेक कहानियाँ उच्चस्तरीय हैं, इसमें संदेह नहीं। विषयगत,

---

१) रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २४२
२) वही – पृ. क्र. २४२
३) वही – पृष्ठ क्र. २४४
४) वही – पृष्ठ क्र. २४५

कालगत एवं चित्रणगत व्यापकताओं की दृष्टियों से कहानीकार प्रसाद एक महान् कलाकार हैं और इस महानता में 'इन्द्रजाल' का योगदान, 'आकाश–दीप' और 'आँधी' के अनन्तर, सर्वथा अप्रतिम है।'' १

५.१.४ प्रतिध्वनि :–

''प्रतिध्वनी'' में पन्द्रह कहानियाँ हैं– 'प्रसाद', 'गूदड़ साई', 'गुदड़ी में लाल', 'अघोरी का मोह', 'पाप की पराजय', 'सहयोग', 'पत्थर की पुकार', 'उस पार का योगी', 'करूणा की विजय', 'खण्डहर की लिपी', 'कलावती की शिक्षा', 'चक्रवर्ती का स्तम्भ', 'दुखिया', 'प्रतिमा', और 'प्रलय'। " 'छाया' के समान इसका शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। इन दोनों पुस्तकों में शीर्षक नाम कहानियाँ नहीं हैं जबकि 'आकाश –दीप', 'आँधी' और इन्द्रजाल के शीर्षक प्रथम कहानियों पर ही आधृत हैं। कहानियाँ काल्पनिक घटनाओं को ही शब्दित कर पाती हैं, इनकी भावूकता भी बहुत भोली–भोली है, फिर भी, बीसवीं सदी में ही जन्मी और बढ़ी हिन्दी–कहानी के इतिहास में इनका उल्लेख सर्वथा समीचीन होगा, क्योंकी एक तो ये समय की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, दूसरे एक महान् कलाकार की सामान्य कृतियों की दृष्टि से। नितान्त आरम्भिक 'छाया' की आख्यायिकाओं में ये श्रेष्ठतर हैं, क्योंकी इनमे यत्र–तंत्र जीवन–तत्व विदयमान है। 'प्रतिध्वनी' की सर्वोत्तम कहानी 'सहयोग' दाम्पत्य जीवन के पुरूष पक्षगत यौन – मनोविज्ञान के सम्यक् चित्रण की दिशा में प्रर्याप्त सफल होने के कारण प्रसाद के साहित्य की एक उल्लेखनीय रचना मानी जा सकती है। 'प्रतिध्वनी' में काव्यात्मक भाषा, भावनात्मक नाटकीयता, यंत्र–तंत्र करूणान्तता तथा सामान्यत: प्रकृति चित्रण नजर आता है।"२

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २४६
२. वही – पृ. क्र. २४८

''संगंह की पहली कहानी 'प्रसाद' के प्रसादत्व के प्रकाश की एक किरण कही जा सकती है, जो कविता के अधिकाधिक निकट है। इसमें नायिका सरला की सरल, किन्तु स्वायतत्ता से दीप्त, भक्ति को प्रसादान्त प्रदान किया गया है। रूढ़ीग्रस्त भक्ती के प्रखर विरोधी प्रसाद सहज भक्ति के महान् गौरव से पूर्णत: अभिज्ञ हैं। स्थूल राजनैतिक वाद – विवाद से मुक्त प्रसाद आस्था का आकलन करने में सर्वत: कुशल हैं।"१

''दूसरी कहानी 'गूदड़–साई है। इसमें फकीर गूदड़ साई की छाती में भी मुठ्ठीभर का इन्सानी दिल ही धड़कता है। उसकी वात्सल्य क्षुधा अपनी पूर्ति के लिए बाल–गोपालों से प्राप्त कष्ट को आमंतित्र करते नहीं थकती।"२

''तीसरी कहानी 'गुदडी में लाल' एक ऐसी दीन, किन्तु तेजस्वीनी 'बुढिया' का विवरण प्रस्तूत करती है, जिसका अतीत सम्पन्न था, जो श्रम से अर्जन करना तो जानती थी, किन्तु दया–दान पर आधृत जीवन–यापन करना नहीं । जब दयालु धनिक रामनाथ उसे, अवकाश प्राप्त व्यक्ती के सदृश वृत्ती प्रदान कर पुण्य लाभ की कल्पना करते हैं, तब उसके पावन अहं की शीतल ज्वाला उसे भस्मीभूत कर देती है । उसका सच्चा स्वाभिमान ही गुदड़ी का लाल था । "३

"चौथी कहानी 'अघोरी का मोह' में कहानी – कला के कई तत्व दृग्गत होते हैं। इसमे कौतुहल एवं नाटकीयता भी विदयमान हैं। ललित एक धनी किन्तु कुण्ठित व्यक्ति है । किशोर निर्धन होने पर भी उससे भरपूर प्रेम प्राप्त करता है । दोनो में 'पवित्र सौहार्द्र' है। दोनों के आरम्भिक नौका – विहार के अनन्तर, कहानीकार '२५ वर्ष बाद' सम्पन्न हुए किशोर को एक ऐसे आदृत

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २४८
२. वही – पृ. क्र. २४८
३. वही – पृ. क्र. २४९

अघोरी से मिलाता है, जो किसी से कुछ नहीं माँगता, किन्तु उससे माँगकर 'सुखे परांवठे' से परितृष्ट दृष्टिगोचर होता है। कहानीकार का किशोर ललित के अघोरी रुप को नहीं पहचान पाता।"१

"पाचवी कहानी 'पाप की पराजय' में कहानीकार पाप–पुण्य का निर्णय पाठकों पर न छोड़कर स्वयं करने लगता है । 'क्या सौन्दर्य उपासना की ही वस्तु है, उपभोग की नहीं?' एक गम्भीर प्रश्न है और जब 'क्या सौन्दर्य उपभोग के लिए नहीं', केवल उपासना के लिए है?' तब वह गम्भीरतर हो जाता है ।"२

"छठी कहानी 'सहयोग' संग्रह की सर्वोत्तम कृती है। यौनगत प्रवृत्ती–निवृत्ती का गहन व्दन्व्द इस कहानी को प्रसाद की मेष्ठतम कहानियों की पंक्ती में प्रतिष्ठीत कर देता है । एक ओर विषम अतीतगत संस्कारों और विकारों के कारण भारतीय पुरुष नारी को सेविका के रुप में देखने का अभ्यस्त हो गया है, दूसरी ओर सहज और सरल जीवन प्रवाह उसको नारी के प्रिय – रुप की दुर्दम्य स्पृहा से मुक्त नहीं होने देता। इस व्दन्व्द का घात–प्रतिघात इस काहानी में मनोहारी रुप में चित्रित हुआ है । "३

"सातवीं कहानी 'पत्थर की पुकार' एक महान् कलाकृती है । इस कहानी में तथ्य एवं कल्पना का व्दन्व्द प्रसाद की आरम्भिक प्रतिभा की शीतल ज्वाला का एक स्फूर्तिकारी स्फुलिंग माना जा सकता है । समसामायिक 'स्तुत्य अतील की घोषणा और वर्तमान की करुणा का सत्य व्यक्त करने' में कलाकार चिन्तक का गौरव प्राप्त करता है ।"४

---

१. रामप्रसाद मिश्र– "प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २४९
२. वही – पृ. क्र. २४९
३. वही – पृ. क्र. २५०
४. वही – पृ. क्र. २५१

"आठवीं कहानी 'उस पार का योगी' में दो प्रेमियो में एक नदी के इस पार और दुसरा (पहले से अज्ञात रुम में) उस पार चित्रित किया गया है । इस पार नन्दलाल 'सितारी' से मन बहलाने का असफल आयास करता रहता है, उस पार नलिनी गैरिक परिधान मे योगी बनी उसकी व्यथा की झंकारें सुनती रहती है । एक दिन वह विवश होकर उससे मिलने के लिए 'खरसोता' में कुद पड़ती है और उसे बचाने के प्रयास में नन्दलाल भी। दोनो का मिलन होता हैं।"१

"नववीं कहानी 'करुणा की विजय' है । कहानी मे निरुपाय और दरिद्र किन्तु सतेज और स्वाभिमानी, तेरह वर्ष का मोहन भोजनाभाव में तीन वर्ष की आश्रिता रामकली को कूपार्पित कर देता है यह दिखाया है।"२

"दसवीं कहानी 'खंडहर की लिपी' इसमें अतिशय अवशेष – प्रेमी युवक नायक अपनी धुन में सौन्दर्य तक की उपेक्षा करते हुए अन्नत: शताब्दियों प्राचीन ध्वंस के एक नूतन ध्वंस में लीन हो जाता है । पर्याप्त वातावरण की सृष्टी के अभाव में यह प्रलय त्वरा की उद्‌भूती मात्र प्रतीत हो सकती है ।"३

"ग्यारहवी कहानी' कलावती की शिक्षा इसमें एक रचना–व्यस्त उपन्यासकार की पत्नी – उपेक्षा तथा पत्नी के प्रचार राग से पराभूत घटना वर्णित है।"४

"बारहवीं कहानी 'चक्रवर्ती का स्तम्भ' इसमें उल्काधारी म्लेच्छ अश्वारोही चक्रवर्ती का स्तम्भ इसमें उल्काधारी म्लेच्छ अरवारोही चक्रवर्ती महाराज अशोक द्वारा निर्मित विहार को ही ध्वस्त नहीं करते प्रत्युत अबला सरला के अपहरण का विचार भी करते हैं । वृध्द एवं असहाय धर्मरक्षित टुकुर–टुकुर देखने के

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २५२
२. वही – पृ. क्र. २५२
३. वही – पृ. क्र. २५२
४. वही – पृ. क्र. २५२

अतिरिक्त एक क्रिया–प्रार्थना–कर सकता था! किन्तु प्रलयमेघ के माध्यम से उद्‌घोष करनेवाली प्रकृती विरुध्द हो उठी और 'चक्रवर्ती का स्तम्भ अपने सामने यह दृश्य न देख सका। अशनिपात से खण्डखण्ड होकर गिर पड़ा। कोई किसी का बन्दी न रहा।' इस कहानी की असम्भवप्राय नाटकीयतां के मूल में लोक कथा अथवा लोकगीत का चारुत्व विद्‌मान है।"१

"तेरहवीं कहानी 'दुखिया में शीर्षक नाम लड़की की दरिद्र निरीहता का चित्रण किया गया है, जिसे जमींदार के सुपुत्र का संवेदन भी प्राप्त होता है और पशुशाला – निरीक्षक नजीब खाँ का दुर्व्यवहार भी । एक मधुर – स्मृती और अनेक अवगानता – अश्रु के विपर्यय के साथ कहानी समाप्त हो जाती है ।"२

"चौदहवीं कहानी 'प्रतिमा' में विधुर कंजुनाथ की कटु विकलता उनकी आस्था तक को विचलित करने लगती है, जिसे दीप से दीप के प्रज्ज्वलन के न्याय का संयोग प्राप्त हो जाता है – स्वर्गगता पत्नी की अनुजा की आस्था से उनकी आस्था जागृत हो जाती है; चेतना को संस्फुरण प्राप्त हो जाता है, यह कहानी मे दिखाया है ।"३

"पंद्रहवीं कहानी 'प्रलय' प्रतीक सम्पन्न रचना है । प्रलय के आरम्भ का अंत आनन्द में दिखाया है।"४

" 'प्रतिध्वनि' की काहानियाँ अतिभावुकताजन्य गल्पों के रुपो में विवेचित की जा सकती हैं, किन्तु उनमें मानव – मन की विचित्रताएं एव भंगिमाएं कवित्वपूर्ण कलेवरों में बिम्बित हैं। उनकी स्वच्छन्दता यथार्थ की एकान्त उपेक्षा नहीं करती और उनमें यत्र–तत्र जीवन की उष्मा भी विदयमान है । कहानी अतल मानस की एक वीचि है – एक जो अनेक की बोधक है। कहानी

---

१. रामप्रसाद मिश्र– "प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २५३
२. वही – पृ. क्र. २५३
३. वही – पृ. क्र. २५३
४. वही – पृ. क्र. २५३

जीवन–सागर का एक विवर्त है, जिसका सांत अनंत को बिम्बित करता है । इस परिभाषा के निकष को 'प्रतिधनि' की कहानियाँ, अपने सुजनकाल को देखते हुए निराश नहीं करती। 'प्रतिध्वनी' शीर्षक छाया अथवा प्रतीक के सम्पन्न है, काव्यात्मक है, 'लहर' के सदृश मूल्यवान है। इसमें छायावाद को कविता, नाटक और अनेकानेक कहानियो में मूर्तीमन्त साफल्य प्रदान करनेवाले, प्रसाद के तरुण कलाकार हे स्वरो की प्रतिध्वनी स्पष्टत: अनुभूती होती है । 'छाया' की तुलना में यह कृती बहुत अधिक सन्तोषजनक है । प्रसाद की प्रतिभा के विकास की तीव्रता को समझने में इस पुस्तक का अनुशीलन बहुत सहायक सिध्द होता है ।"१

५.१.५ छाया :–

"प्रसाद की सर्वप्रथम रचित कहानियाँ 'छाया' में संगृहीत हैं, जिनकी रचना सन् १९१२–१८ ई. के बीच हुई थी और जो उन्हीं की प्रेरणा से बनी और चली पत्रिका 'इन्दु' में प्रकाशित हुई थीं । इसके प्रथम संस्करणं में केवल पाँच कहानियाँ थीं । दुसरे में ग्यारह। प्रकाशक के अनुसार, 'तृतीय संस्करण मे इन कहानियों का संस्कार भी लेखक ने किया; अंत: ये अपने पूर्व रुप से कुछ भिन्न हो गई ।' मेरे समक्ष सन् १९७४ ई. का छटा संस्करण है 'छाया' का शीर्षक कालान्तर में, अलग से जोड़ा गया है, क्योंकी संग्रह में इस नाम की कोई कहानी नहीं है । प्रतिध्वनि' पर भी यही तथ्य लागू होता है । 'छाया' शीर्षक छायावाद युग का परिणाम है ।"२

'छाया' एक शिथिल आरम्भिक कृती है, जिसमें 'तानसेन', 'चन्दा', 'ग्राम', 'रसिया बालम', 'शरणागत', 'सिकन्दर की शपथ', 'चित्तौर–उध्दार', 'अशोक', 'गुलाम', 'जहाँनारा' और 'मदन –मुणालिनी' शीर्षक ग्यारह आख्यायिकाएं संग्रहीत है ।

---

१. रामप्रसाद मिश्र– "प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २५४
२. वही – पृ. क्र. २५५

"पहली रचना 'तानसेन' है इस कहानी में रामप्रसाद नामक अज्ञात गायक की एकान्त में व्यक्त कला से मंत्र – मुग्ध एक मुसलमान दुर्गपति उसे तानसेन की पदवी तथा सौसन नामक दासी, जो गायिका थी, प्रदान करता है, क्योंकि दोनों परस्पर मुल प्रेम की मोहक श्रृंखलाओं मे बंध गए थे । मुसलमान सरदार 'धरम' से ब्याह की बात करता है । इसपर तानसेन उत्तर देते है, 'आज से हमारा धर्म –'प्रेम' है ।'यहीं पर कहानी खत्म हो जाती है ।"१

"दुसरी रचना 'चन्दा' में नायिका के दो प्रेमी होते हैं और जिसे वह सचमुच चाहती है, उसे अवांछित व्यक्ति छल–कपट से, समाप्त हो जाने देता है, जिससे रुष्ट होकर वह ठीक वैसे हो छल – कपट से, उस क्रूर – निर्मम व्यक्ति की हत्या करके, अपने गत प्रिय की स्मृती में आत्मघात कर लेती है। इसमें रोमैन्टिक कल्पना – लोक का सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है ।"२

"तीसरी रचना 'ग्राम' में घटना का वर्णन है । देशकाल का चित्रण किया है। 'ग्राम' प्रसाद की प्रथम कहानी के रुप में प्रसिध्द है । इसमें संयोगात्, वर्षा के कारण, बाबू मोहनलाल एक ऐसी तेजस्विनी महिला के पास पहुँच जाते हैं, जो उनके ही पिता के अन्याय के कारण सम्पन्न से विपन्न हुई थी, किन्तु जिसमें उच्चसंस्कारगत अभिमान आपूर्ण था, जिसके कारण उन्हें विषाद और लज्जा का अनुभव होता है । प्रसाद का अत्याचारग्रस्त के प्रति संवेदन इसका एकमात्र विवेच्य–बिन्दु है । "३

"चौथी रचना 'रसिया बालम' दुखांत और मार्मिक है। इसका नायक बलवन्तसिंह प्रेम का असली दीवाना है जो प्रेमिका की प्राप्ति के लिए, फरहाद

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २५५
२. वही – पृ. क्र. २५६
३. वही – पृ. क्र. २५६

का नहर बनाने के समान ही, पहाड़ी रास्ता बनाने का काम करने में जुटा पड़ता है, किन्तु प्रेमिका राजकुमारी की माता के छल के कारण आत्मघात कर लेता है।"१

"पाँचवीं रचना 'शरणागत' में हमारे प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम की मान्य अव्यवस्था एवं सार्वभौम नेतृत्व से रहित सौनिक उच्छृंखलता की वह झलक भी मिलती है, जिसके कारण आज भी 'स्वातंन्त्र्य संग्राम या सिपाही विद्रोह' का विवाद जिवित है ।"२

"छटी रचना 'सिकन्दर की शपथ' एक ऐतिहासिक कहानी है । इसमें मशाल हाथ में लेकर दुर्ग के ध्वस्त भागों के पुनर्निर्माण का निरीक्षण नेतृत्व करते हुए पठान सरदार सिकन्दर के तीर का शिकार हुआ । पठान सरदार की वीर पत्नी से की गई सान्धि को पदाक्रान्त कर सिकन्दर ने उन वीर भारतीय सौनिकों को, जो पड़ौसी देश की सहायता के लिए गए थे, अपनी सेना मे सम्मिलीत करने का प्रयास किया, जिन्हौने वीरतापूर्ण बलिदान को ही स्विकारा। यह कहानी देशभक्ती की भावना से भरी हुई है।"३

"सातवीं रचना 'चित्तौर उध्दार' में हम्मीर के द्वार अपनी पत्नी (जो प्रतापी राजा मालदेव की पुत्री थी तथा जिसके बाल–विधवा होने के तत्थ को छिपाते हुए पिता ने अनुचित विवाह–आमन्त्रण देकर अपने शत्रु से छल भी किया था।) के सहयोग से राजधानी को (मालदेव के ही अधिकार से) मुक्त कराने का वृत्त वर्णित है । प्रतापी पिता के छल से कुण्ठीत पुत्री स्वातन्त्र्य – प्रेमी पति को सफल करने में सहायक होती है ।"४

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २५६
२. वही – पृ. क्र. २५७
३. वही – पृ. क्र. २५७
४. वही – पृ. क्र. २५७

"आठवी रचना 'अशोक' अनेक असंगत घटनाओ का समाहार है । इसमें सम्राट द्वारा पौण्ड्रवर्धन में बुध्द की मूर्ति तोड़ने पर जैनों का व्यापक संहार करना तथा प्रौढ़ सम्राट की युवती पत्नी तिष्यरक्षिता द्वारा उनके युवा पुत्र कुणाल पर आसक्त होना और उसकी आँखे निकालने का कुचक्र रचना प्रमुख घटनाएं है ।"१

'छाया' की सर्वोत्तम तथा कला की दृष्टि से एकमात्र सफल कहानी 'गुलाम' है। " 'गुलाम' कहानी में पतनोन्मुख युगल–विलासिता का प्रभावी चित्रण प्राप्त होता है । पाठको के प्रति सीधा सम्बोधन इसमें भी विद्यमान है, जो पुरानी शैली का एक अच्छा दयोतक है बादशाह शाह आलम की दुर्दमनीय मांसल स्पृहा के परिणाम स्वरुप पुंसत्व–वंचित गुलाम कादिर की कुण्ठा क्रूरता की विकृती में अवसित होती है और अंत में वह उनकी आँखें निकाल लेता है। इस कहानी में मुगलों में व्याप्त समलिंगी मैथुन–वृत्ति का प्रभावी संकेत प्राप्त होता है । इस कहानी में 'गुलाम' के मानसिक व्दन्व्द का भी चित्रण किया गया है। चरित्र–चित्रण की गम्भीरता से सम्पन्न इस कहानी में प्रसाद की परवर्ती कला का बीज–रुप में दर्शन किया जा सकता है।"२

" 'जहाँनारा' ऐतिहासिक दृष्टी के सफल रचना है । इसमे शाहजहाँ के राजनैतिक पतन एवं बंदी – जीवन में जहाँनारा की अटल पितृभक्ति का मार्मिक वर्णन किया गया है, जिसमें कला का स्थान भावना ने ले लिया है । जहाँनारा की पितृभक्ति पौराणिक कथाओं का स्मरण कराती है ।"३

"अन्त की 'मदन–मृणालिनी' एक रोमैन्टिक रचना है। इसमें रामलीला–प्रेमी मदन बालबुध्दी के आक्रोश से अभिभूत होकर, शीघ्र भोजन प्राप्ती की सहज स्पृहा में, घर पर आई एक महिला पर, अपने बालधनु से तीर चला देता है । इस अनन्तर वह पर्याप्त कारण के बिना ही भयातिरेक में घर से भाग खड़ा

---

१. रामप्रसाद मिश्र– ''प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २५८
२. वही – पृ. क्र. २५८
३. वही – पृ. क्र. २५९

होता है । यहाँ तक कहानी है, इसके बाद कथा। कलकत्ते में उसे नोकरी मिलती है, मालिकों की कृपा मिलती है, मृणालिनी मिलती है । मालिक सपरिवार, व्यवसायिक कारणवश सीलोन चले जाते हैं । मदन साथ है । वहाँ मालिक के क्रोध के कारण मदन को निकलना पड़ता है । वह अध्यवसाय के बल पर करोड़पति बन जाता है। उधर मालिक – परिवार गरीब होता नजर आता है । इस पर मदन अपनी विपुल वित्तराशी मृणालिनी को प्रदान कर भारत चल देता है और ऐसी व्यवस्था करता है कि प्रेमिका उसे गतिशील पोत पर ही अवलोक पाती है । कहानी बड़ी है । इसमें हृदयस्पर्शी अंश भी है । असफल प्रेम का चित्रण मिलता है ।"१

"'छाया' प्राथमिक स्तर की प्राथमिक कृति है, किन्तु इसमें काव्यात्मक भावुकता, असफल प्रेम में मुलभूत – प्रेम दर्शन, इतिहास – कल्पना–समन्वय, दुखोतता इत्यादि प्रसाद की कहानी कला के लगभग सारे बीजों का अनुसन्धान किया जा सकता है । इस भोली – भाली कृती के छोटे – से दर्पण में एक महान कलाकार का बिम्ब अंकित है ।" २

निष्कर्ष :–

निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि प्रसाद के कूल पाँच कहानी संग्रह है। हर संग्रह की कहानियाँ उद्देशपूर्ण है । प्रसाद ने अपने कहानियों के माध्यम से सामाजिक रुढ़ी, परंपरा पर प्रकाश ड़ाला है। प्रसाद ने अपनी कहानियो में नारी को सबसे श्रेष्ठ माना है सफल और असफल प्रेम को भी चित्रित किया है। इसप्रकार प्रसाद के पाँचों कहानी संग्रह हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ कहानी संग्रह है।

---

१. रामप्रसाद मिश्र– "प्रसाद : आलोचनात्मक सर्वेक्षण – पृष्ठ क्र. २६०
२. वही – पृ. क्र. २६०